Mahila college, Dalmianagar) B.A. Part-II (Subsidiary)
Topic
Kusum Kumari
Psychology

Dream work and dream-mechanisms. Date-3/02/2024
(स्वप्न - कार्य तथा स्वप्न रचना) का प्रकार

स्वप्न का निर्माण कैसे होता है?

प्रश्न यह उठता है स्वप्न का निर्माण कैसे होता है। इस समस्या के समाधान के सम्बन्ध में फ्रायड (Freud) ने स्वप्न कार्य (dream-work) तथा स्वप्न रचना का उल्लेख किया। अतः हम स्वप्नों के निर्माण में स्वप्न-कार्य तथा स्वप्न की भूमिका की व्याख्या अलग-अलग करना चाहेंगे।

स्वप्न-कार्य क्या है? (What is dream work)

स्वप्न कार्य के सम्प्रत्यय का उल्लेख सबसे फ्रायड (Freud) ने किया। उन्होंने कहा कि स्वप्न-कार्य वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा स्वप्न का अव्यक्त विषय इसके व्यक्त विषय में बदल जाते हैं। ब्राउन (Brown) ने इसकी चर्चा करते हुए कहा कि "फ्रायड ने उस क्रिया तन्त्र या रचना को स्वप्न कार्य की संज्ञा दी जिसके द्वारा अव्यक्त स्वप्न-विषय, व्यक्त स्वप्न-विषय में बदल जाते हैं।"

स्वप्न-रचना क्या है → कुछ विद्वानों ने स्वप्न-कार्य तथा स्वप्न-रचना समान माना है। उनके अनुसार स्वप्न निर्माण की कार्य विधि को स्वप्न कार्य अथवा स्वप्न रचना कहते हैं।

दूसरे शब्दों में जिस कार्य तंत्र के द्वारा स्वप्न अव्यक्त विषय का रूपान्तरण व्यक्त विषय में होता है, उसे स्वप्न-रचना कहते हैं।

स्वप्न-रचना के प्रकार :-

फ्रायड (Freud) ने स्वप्न-रचना के निम्नलिखित प्रकारों का उल्लेख किया है, जिनके निर्माण द्वारा स्वप्न का निर्माण होता है। अर्थात स्वप्न के अव्यक्त विषयों का रूपान्तरण व्यक्त विषयों में हो जाता है:-

(1) संक्षेपन (Condensation)
(2) विस्थापन (Displacement)
(3) नाटकीकरण (Dramatization)
(5) गौण-विस्तारण (Secondary elaboration)

अब प्रत्येक रचना का अलग-अलग व्याख्या करेंगे:-

(1) संक्षेपन (Condensation) → संक्षेपन एक मुख्य रचना है जिसके द्वारा हम स्वप्न का अव्यक्त विषय संक्षिप्त होकर व्यक्त विषय में परिवर्तित हो जाता है। अव्यक्त विषय के बहुत सारे विवरण छूट जाते हैं और थोड़े अंश व्यक्त विषय के रूप में प्रकट होते हैं। रेबर (Reber, 1987) ने कहा कि "संक्षेपन एक अचेतन प्रक्रिया है, जिसके द्वारा दो या अधिक प्रतिमाएँ या तत्व संघटित होकर एक संयुक्त प्रतिमा का निर्माण करते हैं।" शेष अगले दिन

स्वप्न कार्य - क्षेत्र

Date: 3/12/21

उदाहरण स्वरूप, उदाहरण द्वारा संक्षेपण के स्वरूप को और भी अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। एक युवती ने स्वप्न देखा कि किसी ने अन्धकार में ही उसका सामान चोरी लिया। जब उसने चोरकी तलाश की उसे केवल एक लाल गुब्बारा नजर आया। यह स्वप्न इतना संक्षिप्त था कि उसे यह निरर्थक लगा। मनोविश्लेषण से पता चला कि एक युवक सिपाही लाल रंग के घोड़े पर चढ़कर उस युवती के घर से होकर प्रतिदिन गुजरा करता था। अपने सिर पर गुब्बारा बांधे रहता सहारणी वह युवती उसकी ओर आकर्षित थी और मिलने की। अनैतिक के कारण उसकी इच्छा अचेतन में दमित हो गई। प्रतिबन्धक के भय से निद्रावस्था में भी इच्छा प्रकट नहीं हो पायी संक्षिप्त रूप में प्रकट हुई। गुब्बारा उस युवक सिपाही का प्रतीक था, लाल घोड़े प्रतीक था, प्रतिदिन गुजरना, आदि विवरण अनुपस्थित थे। यही कार्यांतर संक्षेपण कहलाता है।

(ii) विस्थापन (Dis-placement) → विस्थापन एक स्वप्न रचना है; जिसमें कोई अचेतन इच्छा सम्बन्धित व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रकट न होकर किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रकट होती है। P.T.O.

(ii) प्रतिबन्धवाद :- स्वप्न या व्यक्ति के प्रति स्वप्न में उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति (Expression) होने पर प्रतिबन्धक का भय नहीं रहता है, क्योंकि उस सन्दर्भ में यह अभिव्यक्ति असंगत तथा अर्थहीन बन जाती है। उदाहरण :- एक युवक स्वप्न में देखा कि उसके चाचा की मृत्यु हो गयी है, हालांकि उसका वह चाचा चार साल पहले मर चुका था। उसने अपने स्वप्न को गंभीरता से समझकर उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। मृतक चाचा की ओर इस इच्छा के विस्थापित होने पर इसका संतुष्टि असंगत तथा निरर्थक बन गयी और प्रतिबन्धक का भय समाप्त हो गया। दमित इच्छा की संतुष्टि सहज रूप से सम्भव हो गयी। यही कार्यतंत्र विस्थापन कहलाता है।

(iii) प्रतीकीकरण → यह स्वप्न रचना है, जिसके द्वारा अव्यक्त विषयों का रूपान्तरण व्यक्ति विषयों में हो जाता है। इस स्वप्न रचना में अचेतन इच्छाएँ प्रतीक का रूप धारण करके स्वप्न प्रकट होती है, उदाहरण :- एक युवक ने स्वप्न में देखा कि वह अपनी माता तथा बहन के साथ सीढ़ी चढ़ रहा था, सीढ़ी चढ़ने में आनन्द आ रहा था, जब सीढ़ी चढ़ते उसे ज्ञात हुआ कि उसकी बहन को बच्चा होने वाला है। फ्रायड ने इस स्वप्न में विश्लेषण करते हुए कहा कि सीढ़ी चढ़ना (Sexual-Intercourse) मैथुन का प्रतीक है। P.T.O

वह अपने स्वप्न के टूटे-फूटे अंशों में जोड़ता है।
गौण-विस्तारण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसमें व्यक्ति निद्रा से जाग जाने पर अपने स्वप्नों का स्मरण करता है।